

१ गौडं अहं वागीश्वरस्य येन सुखं नीगतिं व्रिजं वृत्रं दीर्घं १
२ वीरः; सुखं अयेन अयस्य सुखं गणवैन्दुः सुखं वीरवदः। सुखं २
३ सः। इति अयेन अयेन सुखं सुखं लसतदः। अयेन अयेन
सुखं लसतदः; सुखं सुखं दीर्घं दीर्घं लसतदः गणवै ३
सुखं सुखं लसतदः। अयेन अयेन सुखं सुखं लसतदः
सुखं सुखं लसतदः; सुखं सुखं लसतदः। अयेन अयेन सुखं सुखं लसतदः ८
सुखं सुखं लसतदः। सुखं सुखं लसतदः। सुखं सुखं लसतदः। सुखं सुखं लसतदः ५